हमारी गोल्डा

गोल्डा मेयर की कहानी



लेखक : डेविड एडलर , चित्र : डोना रफ

हिंदी : योगेश

"हमारे काल की महिलाएं" श्रृंखला के बारे में

आज के समय में बच्चों को ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों की ज़रूरत है जिनका जीवन उन्हें प्रेरणा और मार्गदर्शन दे सके ताकि वे बदलती दुनिया से सामंजस्य बैठा सकें। "हमारे काल की महिलाएँ" जीवनी-श्रृंखला विशेष रूप से 7 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए तैयार की गई है।

यह श्रृंखला अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण रखती है और बीसवीं शताब्दी की महिलाओं के जीवन पर केंद्रित है—ऐसी महिलाएँ जो राजनीति, कला, विज्ञान, खेलकूद और मनोरंजन जैसे विविध क्षेत्रों से जुड़ी हैं। इनमें ऐतिहासिक हस्तियों से लेकर आधुनिक युग की चर्चित महिलाओं तक सभी शामिल हैं।

श्रेष्ठ लेखकों और चित्रकारों द्वारा लिखी गई ये पुस्तकें जीवंत और रोचक शैली में प्रस्तुत की गई हैं, जिनमें प्रत्येक महिला के बचपन और युवावस्था पर विशेष ध्यान दिया गया है। ये पुस्तकें केवल इतिहास का ज्ञान नहीं देतीं—ये बच्चों को जानकारी, मनोरंजन और प्रेरणा प्रदान करने वाली सच्ची जीवन-कथाएँ हैं।



हमारी गोल्डा

गोल्डा मेयर की कहानी

लेखक : डेविड एडलर

चित्र : डोना रफ

हिंदी : योगेश

मेरी माँ को समर्पित,

जो गोल्डा की ही भांति

पहले सदा दूसरों के विषय में सोचती हैं।

अनुक्रमाणिका

कीव

गोल्डा मेयर हमारे समय की महान नेताओं में से एक थीं। वह इज़राइल की प्रधानमंत्री — यानी देश की नेता — थीं। लेकिन गोल्डा सिर्फ एक नेता नहीं थीं। वह एक दुकान चलाने वाली, स्कूल शिक्षिका, पुस्तकालयाध्यक्ष, बादाम बीनने वाली और देश के लिए धन-संग्रह करने वाली भी थीं। वह मुर्गी पालन करने वाली, भूख हड़ताल करने वाली और स्वतंत्रता सेनानी थीं। वह एक माँ थीं, और एक दादी भी थीं। वह थीं — गोल्डा।

गोल्डा ने पत्थर हटाए और पेड़ लगाए। वह हथियारबंद दुश्मनों के सामने से बंदूकें लेकर गुज़रीं। उन्होंने मज़दूरों, सैनिकों, राष्ट्रपतियों और राजाओं से वाद-विवाद किया।

गोल्डा कठोर थीं, दृढ़-निश्चयी थीं। वह मज़बूत थीं। लेकिन — गोल्डा को वह शक्ति मिलती कहाँ से थी?

वह शक्ति शायद गोल्डा को अपनी परदादी, बॉबे गोल्ड से मिली थी। चौरानवे वर्ष की उम्र में भी बॉबे गोल्ड अपने पूरे परिवार पर अधिकार रखती थीं। वह अब भी अपनी चाय में नमक डालती थीं — ताकि यह याद रहे कि यहूदियों की मातृभूमि से दूर रहना कितना कड़वा होता है। नन्ही गोल्डा का नाम भी अपनी परदादी के नाम पर रखा गया था। कुछ लोग तो कहते थे कि गोल्डा का चेहरा भी उन्हीं से मिलता-जुलता था।

गोल्डा को अपनी शक्ति अपने दादाजी से भी मिली हो सकती है। जब वे केवल तेरह वर्ष के थे, तब उन्हें अगवा कर लिया गया था और जबरदस्ती रूसी सेना में भर्ती कर दिया गया था। सेना में जो खाना उन्हें दिया जाता था, वह यहूदी धार्मिक नियमों के अनुसार वर्जित था। उन्होंने उसे खाने से इनकार कर दिया। कई वर्षों तक उन्होंने केवल रोटी और कच्ची सब्जियां खाईं।

गोल्डा के दादाजी का मज़ाक उड़ाया गया, उन्हें धमकाया गया, और सज़ा भी दी गई — क्योंकि उन्होंने ईसाई बनने से इनकार कर दिया था। जब आखिरकार उन्हें सेना से रिहा किया गया, तो उन्हें यह डर था कि कहीं उन्होंने किसी तरह यहूदी धर्म का नियम तोड़ा तो नहीं। खुद को दंड देने के लिए, वे कई वर्षों तक ठंडी रूसी सर्दियों में बिना हीटर वाले आराधना-गृह (सिनेगॉग) में एक सपाट लकड़ी की बेंच पर सोते रहे।

गोल्डा के माता-पिता भी मज़बूत थे। उन्हें होना ही था — क्योंकि वे यहूदी थे और रूस में ज़ार अलेक्ज़ेंडर तृतीय और निकोलस द्वितीय के शासन में रहते थे। वह 1800 के दशक के आखिरी साल थे — रूस में यहूदियों के लिए क्रूरता और भूख से भरे भयावह दिन चल रहे थे।

रूस में यहूदियों को ज़मीन रखने की अनुमति नहीं थी। अधिकांश को “पेल ऑफ सेटलमेंट” कहलाने वाले एक विशेष क्षेत्र में रहने के लिए मजबूर किया गया था।

यहूदी लोग दर्ज़ी, पानी ढोने वाले, फल तोड़ने वाले और लकड़ी काटने वाले होते थे। उनमें से कई तो दिन में बारह से बीस घंटे तक काम करते थे — और बस इतना ही कमा पाते थे कि मुश्किल से रोटी और पानी खरीद सकें।

सन् 1881 में, जब गोल्डा का जन्म होने वाला था, यहूदियों को मॉस्को, तुला, रीगा और अन्य रूसी शहरों से निकाल दिया गया। उसके बाद मॉस्को के पुलिस प्रमुख ने यह घोषणा की कि जो भी किसी यहूदी को पकड़वाएगा, उसे इनाम मिलेगा — और यह इनाम किसी चोर को पकड़वाने के इनाम से दोगुना था।

फिर शुरू हुए पोग्रोम्स (pogroms) — यानी यहूदियों के खिलाफ योजनाबद्ध दंगे। रूसी पुलिस खड़ी होकर देखती रहती, जबकि भीड़ में शामिल मज़दूर और सैनिक यहूदियों पर हमला करते। दरवाज़े तोड़ दिए जाते, खिड़कियाँ चकनाचूर हो जातीं, घरों में आग लगा दी जाती। यहूदियों को लूटा जाता, पीटा जाता, और मार दिया जाता।

यहूदी अपनी रक्षा के लिए क्या करते थे? ज़्यादातर तो छिप जाते थे। कई रूसी यहूदी मानते थे कि लड़ना गलत है — भले ही उन पर हमला क्यों न किया जाए।

एक बार, जब गोल्डा के पिता को पता चला कि उनके इलाके में पोग्रोम होने वाला है, तो उन्होंने अपने छोटे से एक कमरे के घर की खिड़कियों पर लकड़ी की तख्तियाँ ठोक दीं। पर चार साल की छोटी गोल्डा भी जानती थी कि लकड़ी और कीलें किसी चिल्लाते, अट्टहास करते, चीखते दंगाई झुंड को नहीं रोक सकतीं।

गोल्डा इमारत की अँधेरी सीढ़ियों पर खड़ी थी — डरी हुई और गुस्से में। उसे दुख था कि यहूदी अपने आप को बचाने के लिए अधिक कुछ नहीं कर सकते थे। सौभाग्य से, उस दिन पोग्रोम नहीं हुआ।



गोल्डा के पिता, मोशे यित्ज़हाक माबोविच, लंबे, दुबले परन्तु मज़बूत व्यक्ति थे। वह बढ़ई और फर्नीचर बनाने वाले कारीगर थे – और अपने शहर के पहले कारीगरों में से एक थे जिन्होंने लकड़ी का आइसबॉक्स (बर्फ़ रखने का डिब्बा) बनाया था। अपनी कुशलता की वजह से उन्हें "पेल ऑफ सेटलमेंट" क्षेत्र के बाहर रहने की अनुमति मिली थी। लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि वे अच्छी तरह से रोज़ी-रोटी कमा सकते थे। उन्हें काम तो दिया जाता था, पर अक्सर उसकी मज़दूरी नहीं दी जाती थी। एक बार उन्हें सरकारी स्कूल के लिए फर्नीचर बनाने का काम दिया गया। उन्होंने कुछ अतिरिक्त मज़दूर भी रखे। काम पूरा होने पर स्कूल ने फर्नीचर तो रख लिया, लेकिन क्योंकि वे यहूदी थे, गोल्डा के पिता को काम का भुगतान नहीं किया गया।

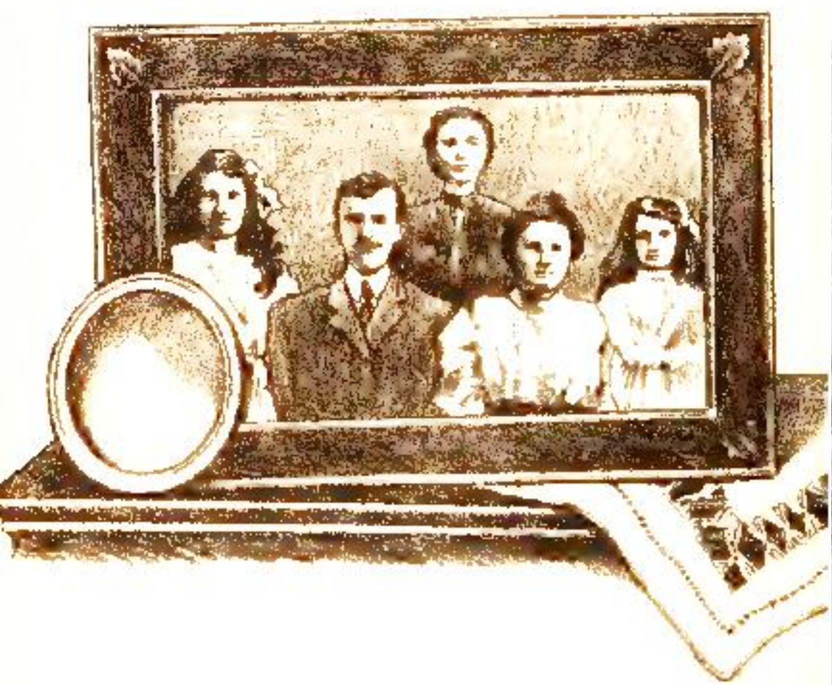
और अब गोल्डा के बारे में।

गोल्डा का जन्म 3 मई 1898 को रूस के कीव शहर में हुआ था, जो "पेल ऑफ सेटलमेंट" क्षेत्र के बाहर था। उस समय जीवन बहुत कठिन था – यहाँ तक कि एक बच्चे के लिए भी। गोल्डा के जन्म से पहले परिवार में छह बच्चे पैदा हुए थे, पर उनमें से केवल एक ही जीवित रह सका। बाकी सब बहुत छोटे रहते ही चल बसे – उनमें से दो तो एक वर्ष की उम्र से पहले ही। गोल्डा भी शायद जीवित न रहती, अगर उसके जन्म से पहले एक धनी परिवार ने उसकी माँ को अपने नवजात शिशु की देखभाल के लिए नौकरी पर न रखा होता। इस काम के साथ गोल्डा के माता-पिता और उनकी बहन शेना अपने छोटे, सीलन-भरे कमरे से निकलकर एक अपेक्षाकृत बड़े और रोशनीदार कमरे में जा सके।

लेकिन कमरा नया होने पर भी उनकी ज़िन्दगी आसान नहीं हुई। परिवार के पास न तो पर्याप्त खाना था, न सर्दी में कमरे तो गर्म रखने की व्यवस्था, और न ही गर्म कपड़े। शेना, जो गोल्डा से नौ साल बड़ी थी, अक्सर भूख से स्कूल में बेहोश हो जाती थी। फिर, जब गोल्डा तीन साल की थी, परिवार में एक और बेटी का जन्म हुआ – जिसका नाम था ज़िपके (Tzipke)।

कभी-कभी गोल्डा जो पतला दलिया (पॉरिज) खा रही होती, वह भी उसकी थाली से उठाकर नवजात बच्ची ज़िपके को खिला दिया जाता था।

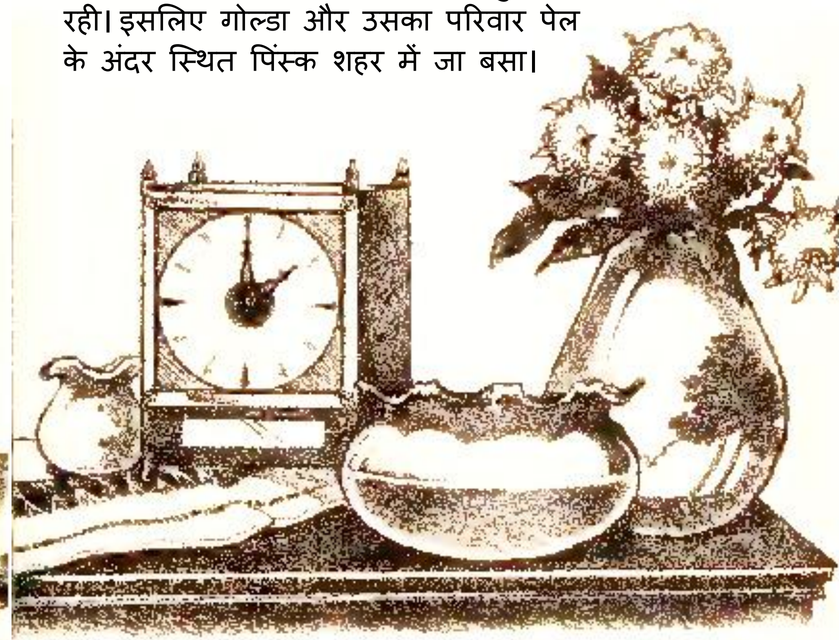
गोल्डा के पिता काम की तलाश में घर से बहुत दूर भटकते रहते थे। कई रातों को जब वे ठंड से काँपते हुए लौटते, तो घर में इतना खाना भी नहीं होता था कि उनके लिए एक ठीक-सा भोजन बनाया जा सके। दिन हफ्तों में बदलते गए, हफ्ते महीनों में, महीने सालों में — पर कुछ भी नहीं बदला। फिर एक रात गोल्डा के पिता ने कहा कि अब बहुत हो गया। उन्होंने तय किया कि वे जाएँगे "गोल्डेन मदीना" — यानी स्वर्ण भूमि — अमेरिका। उन्होंने परिवार की अधिकांश संपत्ति बेच दी, जिसमें उनके औज़ार भी शामिल थे, और जहाज़ का टिकट खरीद लिया।



वह अकेले ही गए। उन्होंने सोचा कि अगर अच्छी कमाई हो गई, तो वे धनवान बन कर रूस वापस आ जायेंगे। और बहुत अधिक नहीं भी कमा पाए, तो कम से कम चार और टिकट खरीद कर अपने परिवार को ही अमेरिका बुला लेंगे।

वह साल था 1903, गोल्डा तब केवल पाँच साल की थी।

गोल्डा और उसका परिवार "पेल ऑफ सेटलमेंट" क्षेत्र के बाहर इसलिए रह पाता था क्योंकि उसके पिता एक कुशल बढ़ई थे। लेकिन जब पिता अमेरिका चले गए, तो परिवार को अब कीव में रहने की अनुमति नहीं रही। इसलिए गोल्डा और उसका परिवार पेल के अंदर स्थित पिंस्क शहर में जा बसा।



पिंस्क

कीव और पिंस्क एक-दूसरे से बहुत अलग थे। कीव एक बड़ा शहर था, जिसकी सड़कें पक्की थीं। पिंस्क उससे बहुत छोटा था – और अपनी कीचड़ के लिए मशहूर था। वहाँ कीचड़ सड़कों को ढक लेती थी और घरों के आँगन तक में भर जाती थी। वहाँ गहरे, गीले दलदली इलाके (swamps) भी थे, और गोल्डा की माँ ने उसे हमेशा चेतावनी दी थी कि वह उन दलदलों के पास न जाए। लेकिन गोल्डा हमेशा बात नहीं मानती थी। एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ दलदल के पास खेल रही थी, तभी अचानक रूसी सैनिकों का एक झुंड – कज़ाक (Cossacks) – वहाँ आ गया। वे अपने घोड़ों पर सवार होकर डरे-सहमे बच्चों के ऊपर से निकल गए। उस घटना ने छोटी गोल्डा को बुरी तरह डरा दिया। अब वह मानने लगी कि वे दलदल सचमुच खतरनाक हैं –वहाँ कहीं कज़ाक छिपे रहते हैं, जो कीचड़ से निकल कर यहूदियों पर हमला करने का इंतज़ार करते हैं।

कुछ लोगों के लिए पिंस्क कीचड़ का शहर नहीं, बल्कि सुअरों का शहर था। वहाँ दुबले-पतले, भूखे सुअर सड़कों पर खुलेआम दौड़ते रहते थे। बच्चे उनके पीछे भागते थे। ये जंगली सुअर लोगों के घरों में घुस जाते, और बाहर भागने से पहले पानी के पीपे उलट देते और जो भी बचा-खुचा खाना मिलता, खा जाते।

लेकिन ज़्यादातर लोगों के लिए पिंस्क मजदूरों का शहर था। लोग पीना (Pina) और प्रिपेट (Pripet) नदियों पर काम करते थे – वे मछलियाँ पकड़ते, नावों पर माल चढ़ाते और उतारते थे।सर्दियों में जब नदियाँ जम जातीं, तो वे उनमें से बर्फ़ काटकर निकालते, फिर उसे तहखानों और गड्ढों में दबाकर, भूसे से ढँक देते, ताकि गर्मियों में इस्तेमाल की जा सके। पिंस्क में लोग मोमबत्ती, प्लाइवुड, माचिस, जूते की कीलों की फैक्टरियों और आटा पीसने की मिलों में काम करते थे।

पिंस्क एक यहूदी शहर था। यहाँ सबथ (विश्राम दिवस) और यहूदी त्योहारों पर सभी फैक्टरियाँ बंद रहती थीं।

तो जब मजदूर काम पर नहीं जाते थे, वे क्या करते थे? वे सिनगॉग (आराधना-गृह) में जाकर प्रार्थना करते, दोस्तों से मिलने जाते और बातें करते। और जब वे बातें करते, तो चाय पीते। वे बहस करते और चाय पीते। पिंस्क में कुछ लोग तो एक दिन में तीस-चालीस प्याले चाय पी सकते थे! कुछ लोग अपनी चाय में स्ट्रॉबेरी या चेरी की जेली मिलाते, तो कुछ लोग चीनी का टुकड़ा दाँतों के बीच दबाकर उसमें से चाय को छानकर पीते थे।

पिंस्क के लोग यहूदी मातृभूमि के बारे में बातें और बहस करते थे। कई लोग ज़ायनिस्ट (Zionists) थे — ऐसे लोग जो बाइबल में यहूदियों को ईश्वर द्वारा दी गई भूमि पर एक यहूदी देश स्थापित करने के लिए काम कर रहे थे। उस समय यह भूमि फिलिस्तीन कहलाती थी। आज यह इज़राइल और जॉर्डन है। कुछ लोग सोचते थे कि मातृभूमि बनाने के लिए पूर्वी अफ्रीका में काम करना अधिक आसानी से और शीघ्रतापूर्वक होगा। और कुछ लोग बंडिस्ट (Bundists) थे — जो मजदूरों के अधिकारों के लिए लड़ रहे थे।

कई बातें और बहसें गोल्डा के दादाजी की सराय में होती थीं। यहीं गोल्डा और उसका परिवार पिंस्क आने के बाद सबसे पहले रहता था। गोल्डा की माँ ब्लूम रसोई में काम करती थीं। वह शराब, बीयर, व्हिस्की और खाने परोसने में मदद करती थीं। गोल्डा और उसकी दो बहनें पिंस्क में रहते समय भूख से बेहोश नहीं होती थीं। सराय के ऊपर रहने के कारण हमेशा पर्याप्त भोजन मिल जाता था।

1903 में जब गोल्डा पिंस्क आई थी, तभी किशिनेव नामक एक अन्य रूसी शहर में एक भयानक पोग्रोम हुआ। किशिनेव के पुलिस प्रमुख ने दंगाइयों को प्रोत्साहित किया। ज़ार के पाँच हज़ार सैनिकों ने खड़े रहकर भी हिंसा को रोकने की कोशिश नहीं की। पोग्रोम खत्म होने पर उनतालीस यहूदी मरे और पाँच सौ से अधिक बुरी तरह घायल हो गए। दुकानों को लूट लिया गया और जलाया गया। हज़ारों यहूदी परिवार अपने घर खो बैठे।

पेरिस, लंदन और न्यूयॉर्क में यहूदी लोग किशिनेव में हुई हत्याओं के विरोध में इकट्ठा हुए। रूस के यहूदी लोग चर्चा करने लगे कि अगली बार ऐसा हुआ तो वे इस हिंसा का जवाब देंगे, और ज़ार के शासन को उखाड़ फेंकने का प्रयास करेंगे।



पिन्स्क और अन्य स्थानों पर यहूदी लोगों ने किशिन्येव में मारे गए लोगों की स्मृति में पूरे दिन कुछ भी खाया या पिया नहीं।

जब पाँच साल की गोल्डा ने सुना कि बड़े लोग खाना नहीं खा रहे हैं, तो उसने भी खाने से इनकार कर दिया। ब्लूम ने उसे समझाया कि छोटे बच्चे के लिए भूखा रहना ठीक नहीं है। लेकिन गोल्डा जिद्दी और दृढ़ निश्चयी थी। उसने भी पूरे दिन उपवास रखा—किशिन्येव में मारे गए यहूदियों की याद में।

गोल्डा और उसका परिवार अपने दादाजी के घर में ज़्यादा दिन नहीं रहा। ब्लूम रोटी और केक बनाती और बेचती थी, और जब उसके पास पर्याप्त पैसे हो गए, तो वह अपनी बेटियों के साथ एक छोटे से अपार्टमेंट में रहने चली गई। ब्लूम ने वह अपार्टमेंट एक बूढ़े कसाई से किराए पर लिया था। उसमें दो कमरे थे। एक कमरे की दीवार से सटी एक बड़ी पत्थर की कोयला जलाने वाली भट्टी थी। उस भट्टी की ऊपरी सतह समतल और गर्म रहती थी—छोटी गोल्डा जैसी बच्ची के आराम करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त जगह।

इसी भट्टी के ऊपर बैठी गोल्डा ने अपनी बहन शेना को अपनी सहेलियों से बात करते सुना—वे ज़ार को अपदस्थ करने की बातें कर रही थीं। और वे एक यहूदी मातृभूमि बनाने की भी बातें कर रही थीं—ऐसी जगह जहाँ यहूदी लोग अपनी ज़मीन के मालिक हों, जहाँ हर स्कूल उनके लिए खुला हो, और जहाँ कोई पोग्रोम न होते हों।

शेना अन्य घरों में भी बैठकों में जाती थी। शेना, गोल्डा और उनकी माँ जानती थीं कि अगर पुलिस ने शेना को ऐसी किसी बैठक में पकड़ लिया, तो उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा और पीटा जाएगा। सज़ा के तौर पर उसे अपराधियों और देशद्रोहियों के साथ साइबेरिया भेजा जा सकता था—रूस का एक ठंडा, बंजर इलाका। रात में, जब ब्लूम और गोल्डा शेना के घर लौटने का इंतज़ार करतीं, तो वे पास के पुलिस स्टेशन से चीखें सुनतीं। वे सोचतीं—शायद ये शेना की ही चीखें तो नहीं, कहीं उसे पकड़ तो नहीं लिया गया।

फिर आया दुखद वर्ष—1905। पूरे रूस में मज़दूरों ने हड़ताल की— काम के घंटों को काम करने, और बोलने व लिखने की स्वतंत्रता की मांग के लिए। पिन्स्क के यहूदी मज़दूर भी हड़ताल में शामिल हो गए। पिन्स्क में एक बम फटा। यहूदियों को गिरफ्तार किया गया और पीटा गया। एक पुलिसकर्मी को गोली मार दी गई। यहूदी मज़दूरों और ज़ायनिस्टों को सड़कों पर गोली मार दी गई।

"मोशे, अब हम यहाँ और नहीं रह सकते," ब्लूम ने अपने पति को अमेरिका में लिखा।

शुरुआत में मोशे माबोविच के पास ब्लूम और लड़कियों को बुलाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। न्यूयॉर्क में, जहाँ मोशे अमेरिका आने के बाद पहले रहते थे, वे केवल तीन डॉलर प्रति सप्ताह कमा पाते थे। इसलिए वे मिलवॉकी, विस्कॉन्सिन चले गए। वहाँ उन्हें रेलरोड में बढ़ई का काम मिल गया, और 1906 में उन्होंने अपने परिवार को अमेरिका बुला लिया।

ब्लूम, शेना, गोल्डा और ज़िपके अब अमेरिका जा रही थीं।

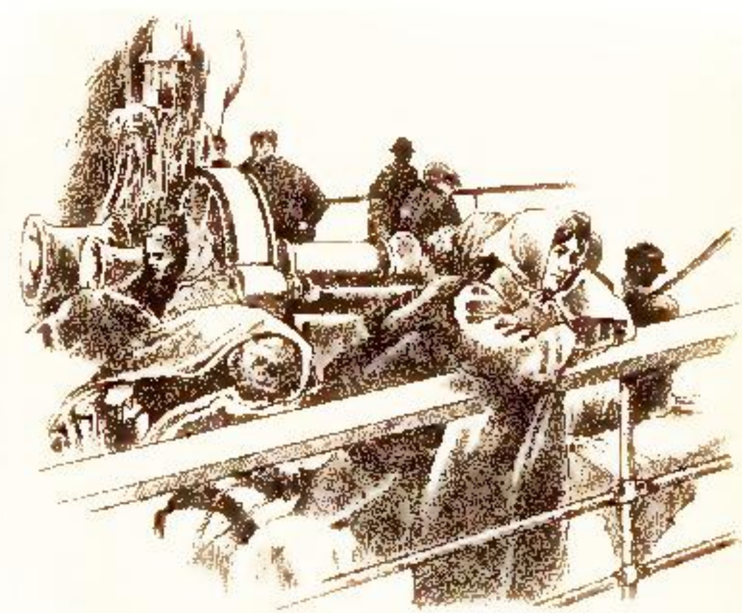
मिलवॉकी

ब्लूम माबोविच ने सामान बाँधा। उसने आपात स्थिति के लिए कुछ पैसे शेना, गोल्डा और ज़िपके की पोशाकों के घेरे में सी दिए। सबने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से विदाई ली।

अमेरिका हज़ारों मील दूर था। ब्लूम और उसकी बेटियाँ रूस से ट्रेन और घोड़ा-गाड़ियों द्वारा ऑस्ट्रिया-हंगरी और जर्मन साम्राज्य से होते हुए बेल्जियम पहुँचीं। एक ट्रेन यात्रा के दौरान उनका सारा सामान गायब हो गया। ब्लूम को अपनी बेटियों की पोशाकों में छिपाए गए सिक्के निकालने पड़े ताकि वह नए कपड़े खरीद सके। रास्ते में पहरेदारों और गाड़ीवानों ने रिश्वत मांगी। उन्होंने ब्लूम से झूठ बोलकर उसके पास के बचे खुचे पैसे भी हड़पने चाहे।

लेकिन ब्लूम इतनी आसानी से धोखा खाने वाली नहीं थी। फिर, जब वे एंटवर्प पहुँचीं—जो बेल्जियम का एक शहर है और उत्तरी सागर के किनारे बसा है—ब्लूम, शेना, गोल्डा और ज़िपके एक जहाज़ पर सवार हुए जो अमेरिका जा रहा था।

उन्होंने उस जहाज़ पर दो हफ्ते बिताए। वह जहाज़ सैकड़ों गरीब, और डरे हुए लोगों से भरा हुआ था, जिन्होंने रूस छोड़ दिया था। रात में वे जहाज़ के निचले हिस्से में एक अंधेरे, तंग केबिन में सोते थे। ब्लूम, शेना और ज़िपके ज़्यादातर समय बीमार रहती थीं। लेकिन गोल्डा नहीं। वह डेक पर खड़ी होकर समंदर के पार देखती रहती थी।



जहाज़ के न्यूयॉर्क बंदरगाह पहुँचने के बाद भी उनकी कठिनाइयां ख़तम नहीं हुईं। निरीक्षक उनका इंतज़ार कर रहे थे—वे ब्लूम और उसकी बेटियों पर चिल्ला रहे थे कि जल्दी करो और लाइन में लगो। बच्चों से कोई भी सवाल पूछा गया—बस यह देखने के लिए कि वे सुन सकते हैं या बोल सकते हैं। डॉक्टरों ने उनके बालों, कानों और आँखों की जाँच की। वे बीमारियों की तलाश में थे। जो कोई अस्वस्थ पाया जाता, उसे वापस रूस भेज दिया जाता।

ब्लूम, शैना, गोल्डा और ज़िपके को अमेरिका में प्रवेश की अनुमति मिल गई, लेकिन वे अभी अपने नए घर से बहुत दूर थीं। उन्हें ट्रेन से नौ सौ मील और सफ़र करना पड़ा—मिलवॉकी, विस्कॉन्सिन तक।

1906 में मिलवॉकी एक बड़ा शहर था—पिन्स्क से तो बहुत बड़ा, यहाँ तक कि कीव से भी बड़ा। यह सुंदर पार्कों और चौराहों वाला शहर था, तीन नदियों वाला, और महान झील मिशिगन के किनारे बसा हुआ। भाप के जहाज़ झील के आर-पार चलते थे, कोयला और अनाज ढोते थे। रेलमार्गों ने मिलवॉकी को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ रखा था।

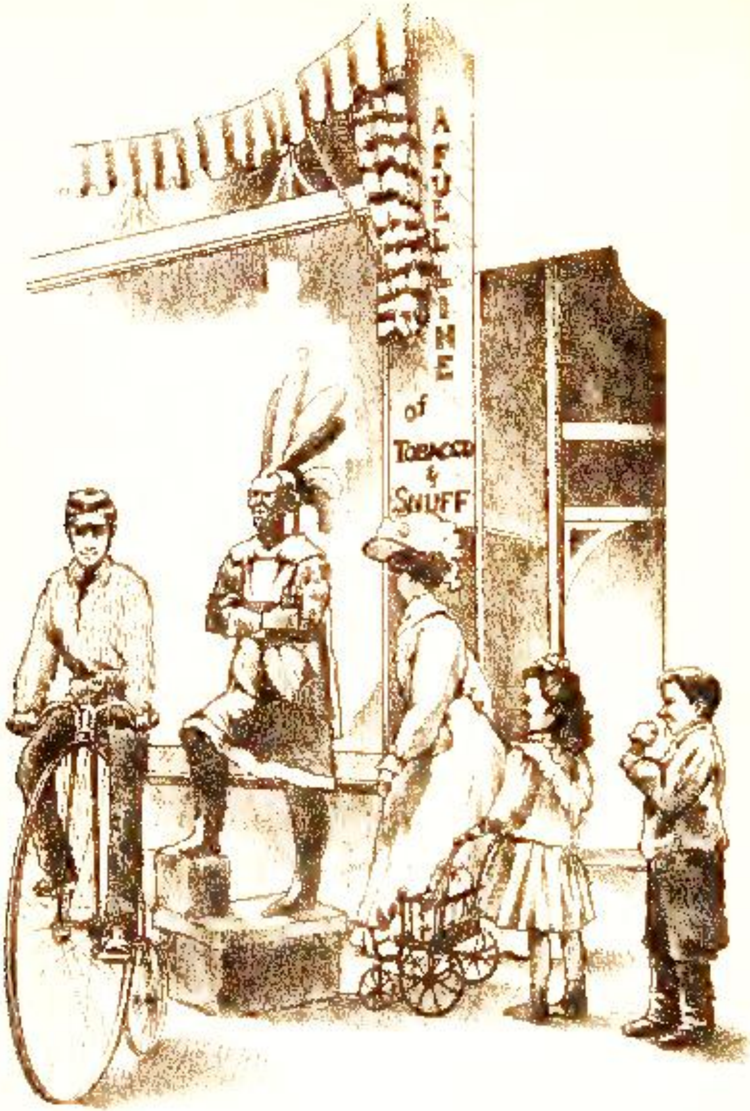
मिलवॉकी के लगभग हर परिवार के माता-पिता संयुक्त राज्य के बाहर पैदा हुए थे। उनमें से ज़्यादातर जर्मनी से आए थे। वे कोयला, लकड़ी, अनाज और आटे का व्यापार करते थे। वे कारखानों में काम करते थे—पुरुषों के कपड़े, जूते, फर्नीचर और मशीनें बनाते थे। और वे बीयर भी बनाते थे। पूरे देश में सबसे ज़्यादा बीयर मिलवॉकी में ही बनाई जाती थी।

जब ब्लूम, शेना, गोल्डा और ज़िपके मिलवॉकी पहुँचीं, तो मोशे ने रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत किया। वह अब बदल चुका था। उसके कपड़े अलग थे – अब वे अमेरिकी लग रहे थे। उसकी दाढ़ी गायब थी। अपनी बेटी गोल्डा को वह एक अजनबी-सा लगा।

उस रात मोशे अपने परिवार को अपने छोटे से किराए के कमरे में ले गया। अगले दिन सुबह वह उन्हें खरीदारी के लिए बाहर ले गया। गोल्डा कारों, ट्रॉलीयों और साइकिलों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गई। उसे नाई की दुकानों की कुर्सियाँ और सिगार की दुकानों के बाहर रखी हुई मूर्तियाँ बहुत रोचक लगीं। उसने देखा कि कैसे लोग लगातार फुटपाथों और दुकानों में भीड़ लगाए चलते रहते थे। उसने सफ़ेद लंबे स्कर्ट पहनी महिलाओं को, रंगीन टाई पहने पुरुषों को, और एक छोटी लड़की को देखा जो एक खिलौना गाड़ी धकेल रही थी, जिसमें एक गुड़िया लेटी हुई थी।

मिलवॉकी गोल्डा के लिए एक रोमांचक जगह थी। जब वे पहुँचीं, तो वह रेलवे स्टेशन से एक कार में बैठी – यह उसकी ज़िंदगी की पहली कार यात्रा थी। अगले दिन गोल्डा शूस्टर के डिपार्टमेंट स्टोर में थी। उसमें पाँच मंज़िलें थीं और वह अब तक उसकी देखी किसी भी इमारत से ऊँची थी। गोल्डा के लिए वह एक "गगनचुंबी इमारत" थी।

गोल्डा को सोडा पॉप, आइसक्रीम, और वे नए अमेरिकी कपड़े बहुत पसंद आए जो उसके पिता ने उसके और उसकी बहनों के लिए खरीदे थे। लेकिन शेना को ये सब पसंद नहीं था। उसका पिता "सच्चा अमेरिकी" बनने की कोशिश कर रहा था, लेकिन शेना बदलने से इंकार कर रही थी। वह मज़दूरों के अधिकारों और एक यहूदी मातृभूमि के लिए संघर्ष जारी रखने के लिए दृढ़ निश्चयी थी। और वह अपना काला पहनावा—ऊँचे कॉलर और लंबे बाजू वाला—वैसे ही पहनती रही, जैसे वह पिन्स्क में पहना करती थी।



गोल्डा की माँ भी दृढ़ निश्चयी थी। उसने ठान लिया था कि उसका परिवार गरीब नहीं रहेगा, और वे सब एक छोटे से कमरे में ठुँसकर नहीं रहेंगे। उसने जल्दी ही उनके लिए एक नया अपार्टमेंट ढूँढ़ लिया। उसमें दो कमरे, एक रसोई और एक लंबा संकरा गलियारा था जो एक खाली दुकान तक जाता था। जल्द ही नए घर में पहुचंने के बाद, ब्लूम ने उस दुकान को दूध, पनीर, मक्खन और रोटी से भर दिया और एक डेयरी की दुकान खोल ली।

गोल्डा को वह दुकान बिल्कुल पसंद नहीं थी। हर सुबह उसकी माँ ताज़ा दूध और अंडे खरीदने के लिए बाज़ार जाती थी। जब गोल्डा की सहेलियाँ स्कूल जा रही होतीं, तब गोल्डा को दुकान संभालनी पड़ती थी – ग्राहकों के लिए आटा और चीनी कप से नाप कर देना, पनीर काटना और रोटी के टुकड़े लपेटना। वह अक्सर स्कूल देर से पहुँचती थी।

एक दिन एक पुलिस अधिकारी उनके घर आया, गोल्डा की देरी के बारे में बात करने। गोल्डा की माँ मुस्कुराती हुई उसकी बातें सुनती रही, जब वह समझा रहा था कि अमेरिका में बच्चों को स्कूल जाना ज़रूरी है और समय पर पहुँचना भी। लेकिन अधिकारी अंग्रेज़ी में बोल रहा था, और बाकी अधिकतर यहूदियों की तरह, ब्लूम केवल यिडिश बोलती थी। उसे अधिकारी की बातों में से मुश्किल से कोई शब्द समझ आया।

गोल्डा दुकान में काम करती रही और स्कूल देर से पहुँचती रही। लेकिन वह एक अच्छी छात्रा थी। उसने जल्दी ही अंग्रेज़ी सीख ली, और चौथी कक्षा में पहुँचकर वह अपने पहले सामुदायिक प्रोजेक्ट में शामिल हो गई। उसने “अमेरिकन यंग सिस्टर्स सोसाइटी” का आयोजन किया।

यह नाम उसने खुद बनाया था। वह केवल ग्यारह साल की थी, लेकिन उसने बैठक के लिए एक कमरा किराए पर लिया। उसने निमंत्रण भेजे और आई हुई बड़ी भीड़ से बात की।

ब्लूम ने गोल्डा को सुझाया की वह अपना भाषण लिख कर तैयार करे, और फिर उसे पढ़े। लेकिन गोल्डा ने इनकार कर दिया। उसे बस खड़े होकर बोलना पसंद था, लोगों को अपने मन और दिल की बात बताना। वर्षों बाद गोल्डा ने हजारों भाषण दिए। वह लगभग हमेशा इसी तरह बोलती—दिल से, बिना किसी लिखित मसौदे के।

गोल्डा ने बैठक में आए लोगों को बताया, कि मिलवॉकी में ऐसे बच्चे भी हैं जो इतने गरीब हैं कि स्कूल की किताबें नहीं खरीद सकते। गोल्डा के भाषण के बाद, ज़िपके ने यिडिश में एक कविता पढ़ी। पैसे इकट्ठा किए गए, किताबें खरीदी गईं। और पहली बार, एक अख़बार ने गोल्डा के बारे में पूरा लेख छापा।

जब गोल्डा स्कूल में थी, उसकी बड़ी बहन शेना एक गंदी और धूल भरी फैक्ट्री में बटनहोल सिलने का काम कर रही थी। शेना एक छोटी, नाज़ुक महिला थी, और वह लंबे समय तक कठिन काम करती थी। वह अक्सर थक जाती थी, और कई बार सुई कपड़े के बजाय उसके अंगूठे में चुभ जाती थी। फिर शेना बीमार हो गई। उसे तपेदिक हो गया, जो फैक्ट्री मजदूरों में आम बीमारी थी। उसे सैकड़ों मील दूर कोलोराडो के डेनवर में एक अस्पताल भेजा गया। यह उसकी बीमारी वाले लोगों के लिए सबसे अच्छे अस्पतालों में से एक था।

जब शेना ठीक हो गई, तो वह डेनवर में ही रही और उसने शमाई कॉर्नगोल्ड से शादी कर ली, जो पिन्स्क से ही उसका प्रेमी था। शेना के अमेरिका जाने के बाद, शमाई को ज़ार के खिलाफ बोलने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था। पर वह जेल से भाग गया, अमेरिका आया, और शेना का पीछा करते हुए पहले मिलवॉकी और फिर डेनवर पहुँच गया।

ब्लूम अपनी बेटी की शादी के बारे में सुनकर क्रोधित हो गई। उसके लिए शमाई एक पागल था—महान विचारों वाला, लेकिन जेब खाली। वह सोच रही थी कि शेना को भला वह किस तरह की ज़िंदगी दे सकता है?

गोल्डा ने शेना को स्कूल के, और अपनी पैकेज लपेटने वाली नौकरी के बारे में लिखा जो उसने अपनी मित्र रेज़ीना के साथ गर्मियों में एक डिपार्टमेंट स्टोर की थी। गोल्डा उस नौकरी में प्रति घंटे साढ़े आठ सेंट कमाती थी। उसने अपनी कमाई से सर्दियों के लिए एक कोट खरीदा। गोल्डा ने शेना को अपने माता-पिता के साथ होने वाली बहसों के बारे में भी लिखा।

इन बहसों में से कई मिस्टर गुडस्टीन के बारे में थीं। वह एक सफल व्यक्ति थे। वह कमरे और अपार्टमेंट खरीदते, बेचते और किराए पर देते थे। मिस्टर गुडस्टीन ने गोल्डा से उसकी माँ की दुकान में मुलाकात की। उन्होंने गोल्डा से बात की, उन्हें वह पसंद आई, और उन्होंने उससे शादी करना चाहा। गोल्डा के माता-पिता इस शादी के पक्ष में थे। लेकिन मिस्टर गुडस्टीन तीस के दशक में थे और गोल्डा केवल चौदह साल की थी। उसने उनसे शादी करने से इंकार कर दिया।

गोल्डा स्कूल में रहकर शिक्षक बनना चाहती थी। लेकिन मिलवॉकी में शिक्षकों को शादी करने की अनुमति नहीं थी। जब गोल्डा के माता-पिता को यह पता चला, तो उन्होंने उसे स्कूल से बाहर निकालने की सोच बनाई।

"तुमने अब तक काफी सीख लिया है," उनके माता-पिता ने कहा। "अब समय आ गया है कि तुम नौकरी करो और शादी कर लो।"

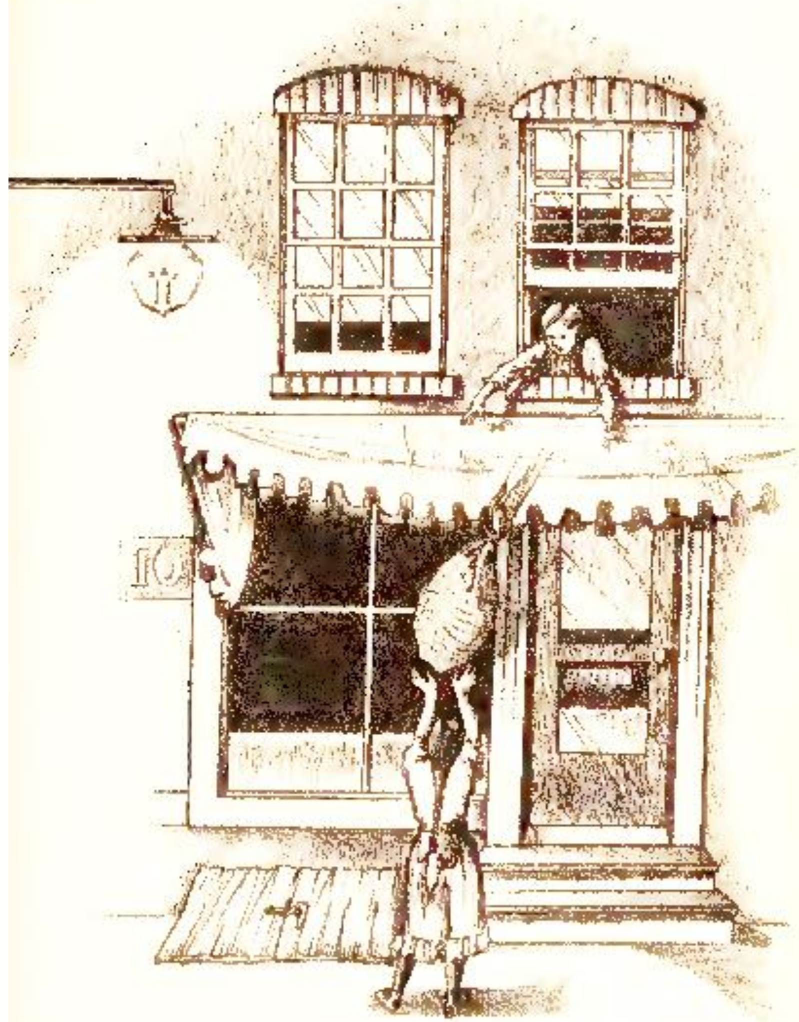
गोल्डा की बहन शेना और उसके पति इससे सहमत नहीं थे। "तुम्हें स्कूल छोड़ना नहीं चाहिए," शमाई ने गोल्डा को लिखा। "तुम्हारे पास कुछ बनने का अच्छा मौका है। मेरा सुझाव है कि तुम तैयारी करो और हमारे पास आ जाओ।"

गोल्डा डेनवर जाकर शेना और शमाई के पास पढ़ाई पूरी करना चाहती थी। लेकिन वह जानती थी कि उसके माता-पिता उसे मिलवॉकी छोड़ने नहीं देंगे। इसलिए उसने भागने का निर्णय लिया।

शेना और शमाई ने गोल्डा की रेलवे टिकट के लिए पैसे भेजे, लेकिन वह पर्याप्त नहीं थे। इसलिए गोल्डा और उसकी अच्छी मित्र रेज़ीना ने, जो लोग अमेरिका में नए-नए आए थे, उनको अंग्रेज़ी पढ़ाने का काम शुरू किया। भुगतान था दस सेंट प्रति घंटा।

जब उनके पास पर्याप्त पैसे इकट्ठे हो गए, तो रेज़ीना ने गोल्डा के भागने की योजना बनाई। एक रात गोल्डा ने अपने कपड़ों को बाँधकर दूसरी मंज़िल की खिड़की से गिरा दिया। रेज़ीना वह कपड़ों का बंडल लेकर रेलवे स्टेशन गई, उसे सामान कक्ष में जमा किया, और घर लौट आई।

गोल्डा ने अपने माता-पिता को एक नोट लिखा, जिसमें बताया कि वह शेना के पास पढ़ाई करने जा रही है। चिंता की कोई बात नहीं है; वह डेनवर से उन्हें पत्र लिखेगी। गोल्डा ने सो रही अपनी बहन ज़िपके को अलविदा कहा और सुबह का इंतज़ार करने लगी।



अगली सुबह, जब गोल्डा के माता-पिता ने उसे किताबें लेकर घर से जाते देखा, तो उन्होंने सोचा कि वह स्कूल जा रही है। लेकिन वह वास्तव में रेलवे स्टेशन जा रही थी। लेकिन निकलने से पहले गोल्डा ने ट्रेन का समय देखा ही नहीं। वह मिलवॉकी रेलवे स्टेशन पर डेनवर की ट्रेन का इंतज़ार करती रही। जब उसके माता-पिता को उसका नोट मिला, तब भी वह वहीं बैठी थी। लेकिन उन्होंने भी ट्रेन का समय नहीं देखा, और सोच लिया कि वह अब तक चल पड़ी होगी । अंततः देर दोपहर के समय गोल्डा डेनवर जाने वाली ट्रेन में बैठी।

शेना का अपार्टमेंट युवा यहूदी विचारकों के मिलने-जुलने का स्थान था। जब गोल्डा स्कूल में नहीं होती, पढ़ाई नहीं कर रही होती, या शमाई की ड्राई-क्लीनिंग दुकान में पैंट प्रेस नहीं कर रही होती, तो वह शेना के अपार्टमेंट में आये लोगों को चाय परोसती। और वह ध्यान से सुनती। उसने वहाँ यह बातें सुनीं—एक दुनिया जहाँ ज़ार, राजा या राष्ट्रपति नहीं होंगे, एक ऐसी दुनिया जहाँ सरकार नहीं होगी। उसने सुना कि दुनिया मज़दूरों, महिलाओं या यहूदियों के लिए न्यायपूर्ण नहीं है। और उसने यह भी सुना कि खुशी महत्वपूर्ण नहीं है; दूसरों के अधिकारों के लिए लड़ना महत्वपूर्ण है।

शेना के अपार्टमेंट में गोल्डा की मुलाकात मॉरिस मेयरसन से भी हुई। जबकि अन्य लोग बहस करते, वह सुनता था। जब वह बोलता, तो धीरे बोलता। वह एक नर्म, शांत व्यक्ति था—साइनबोर्ड पेंटर, जिसे संगीत और कविता से प्रेम था। उसने पंद्रह वर्षीय गोल्डा को पढ़ने के लिए किताबों की सूची दी और उसे पार्क में मुफ्त संगीत समारोहों में ले जाता।

फिर, गोल्डा के मिलवॉकी छोड़ने के दो साल बाद, उसके पिता का एक पत्र आया। यह वही एकमात्र पत्र था जो उन्होंने गोल्डा को डेनवर में लिखा। उन्होंने गोल्डा से विनती की कि वह घर लौट आए। वह मिलवॉकी में स्कूल पूरा कर सकती है।

गोल्डा जानती थी कि उसके पिता के लिए यह पत्र लिखना कितना कठिन रहा होगा। "शायद घर पर सच में मेरी ज़रूरत है," गोल्डा ने सोचा। उसने मिलवॉकी लौटने की तैयारी की।

मॉरिस गोल्डा के साथ नहीं जा सकता था। लेकिन जाने से पहले, उसने चुपचाप गोल्डा से कहा कि वह उससे प्रेम करता है। वह उससे शादी करना चाहता था। और गोल्डा ने मॉरिस से कहा कि वह भी उससे प्रेम करती है।

गोल्डा के माता-पिता दुकान के पीछे वाले अपार्टमेंट से निकलकर नए अपार्टमेंट में रहने लगे थे। उनका नया अपार्टमेंट हमेशा व्यस्त रहता। जब गोल्डा की माँ, ब्लूम, खाना बनाती, तो अक्सर कोई मित्र या पड़ोसी उनके साथ होता, अपनी परेशानियाँ बताता और मदद मांगता।

जब कोई यिडिश लेखक मिलवॉकी आता, या कोई यहूदी मातृभूमि की ज़रूरत के बारे में बोलने आता, तो गोल्डा के पिता उसे अक्सर अपने लिविंग-रूम के सोफ़ा पर सोने के लिए आमंत्रित करते।

जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ और मिलवॉकी के युवा यहूदी समूहों में शामिल होकर तुर्कों से फ़िलिस्तीन को मुक्त कराने के लिए लड़ने गए, तो ब्लूम ने सैनिकों को खाना खिलाया। उसने उनके लिए सिलाई की और उन्हें गर्म केक और कुकीज़ से भरे थैले देकर विदा किया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, जब सेनाएँ यूरोप और रूस के कुछ हिस्सों में मार्च कर रही थीं, यहूदियों को उनके घरों से बाहर निकाल दिया गया।

पिन्स्क में, जहाँ गोल्डा पहले रहती थी, यहूदियों को कतार में खड़ा करके गोली मार दी गई थी। गोल्डा सड़क के किनारे डिब्बे पर खड़ी होकर हिंसा के खिलाफ बोलती थी।

गोल्डा के पिता ने उसके भाषणों के बारे में सुना। वह गोल्डा की बातों से सहमत थे, लेकिन नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी सड़क के कोनों पर खड़ी होकर भाषण दे। उन्होंने गोल्डा से कहा कि अगर वह फिर से सड़क पर जाकर बोलेगी, तो वह उसके बाल पकड़कर उसे घर खींच लाएंगे। लेकिन उस रात गोल्डा फिर से कोने पर खड़ी थी, लोगों को बता रही थी कि निर्दोष यहूदियों के साथ क्या हो रहा है।

गोल्डा के पिता उसे घर ले जाने आए। लेकिन वह खड़े होकर सुनते रहे। गोल्डा इतनी अच्छी तरह बोल रही थी कि वह उसे घर खींच लाने की धमकी पूरी तरह भूल गए।

गोल्डा ने मिलवॉकी की सड़कों में यहूदियों के हालात के बारे में लोगों को बताने के लिए एक जुलूस भी आयोजित किया। लेकिन जुलूस के दौरान भी गोल्डा जानती थी कि भाषण और जुलूस पर्याप्त नहीं हैं—यहूदियों को अपनी ज़मीन की ज़रूरत है।

मॉरिस ने गोल्डा को पत्र लिखा और मिलने आया। वे संगीत समारोहों में गए। उन्होंने कई चीज़ों पर बातें कीं, लेकिन वे हमेशा सहमत नहीं होते थे। मॉरिस नहीं मानते थे कि मातृभूमि यहूदियों की मदद करेगी। लेकिन वे एक-दूसरे से प्रेम करते थे, और दिसंबर 1917 में गोल्डा और मॉरिस मेयरसन की शादी हो गई।

गोल्डा और मॉरिस की शादी आर्थर जेम्स बालफोर के पत्र के एक महीने बाद हुई। वे एक महत्वपूर्ण ब्रिटिश अधिकारी थे जिन्होंने अपनी सरकार की ओर से कहा कि यहूदियों को फ़िलिस्तीन में अपनी मातृभूमि मिलनी चाहिए।



उस पत्र को बालफोर घोषणा (Balfour Declaration) के नाम से जाना गया। और गोल्डा के लिए, जो पहले ही मॉरिस के साथ फ़िलिस्तीन जाने की योजना बना रही थी, उस घोषणा का मतलब था कि एक दिन उसका यहूदी मातृभूमि का सपना सच हो सकता है।

फिलिस्तीन

शादी के शुरुआती दिनों में, मॉरिस साइन पेंटर के रूप में काम करते थे और गोल्डा के पास पोआलेई ज़ायन (Poalei Zion) का काम था। यह एक समूह था जो फ़िलिस्तीन में यहूदी मातृभूमि स्थापित करने के लिए काम कर रहा था। गोल्डा ट्रेन से अमेरिका और कनाडा के विभिन्न शहरों में यात्रा करती और पोआलेई ज़ायन के लिए बैठकों और सम्मेलनों में भाषण देती।

गोल्डा को उसके काम के लिए प्रति सप्ताह पंद्रह डॉलर का वेतन मिलता था, और जब वह यात्रा करती थी, तो पोआलेई ज़ायन उसके खर्चों का भुगतान करता था। लेकिन गोल्डा के यात्रा खर्चों में कभी होटल का बिल शामिल नहीं होता था। उसने दोस्तों के घर ठहरकर पोआलेई ज़ायन के लिए पैसे बचाए। उसने भोजन के बाद मिठाई खाने का खर्च भी कभी उनसे नहीं माँगा। "पोआलेई ज़ायन को मेरी आइसक्रीम का भुगतान करने की कोई आवश्यकता नहीं है," गोल्डा ने कहा। वह उसका खर्च खुद उठाती थी।

जब गोल्डा बाहर रहती, तो मॉरिस थिएटर और संगीत समारोहों में जाता। और वह उनके छोटे से अपार्टमेंट की दीवारों को पत्रिकाओं से काटी गई तस्वीरों से सजाता। जब गोल्डा घर लौटती, मॉरिस हमेशा उसके स्वागत में हाथ में ताज़ा फूल लिए खड़ा रहता।

गोल्डा और मॉरिस अपने पैसे बचाते रहे, और 1921 की वसंत में उन्हें लगा कि वे अब फ़िलिस्तीन जाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने अपनी कुर्सियाँ, टेबल, बिस्तर, परदे और सर्दियों के कपड़े बेच दिए। हालांकि, मॉरिस अपने रिकॉर्ड और चाभी वाले रिकॉर्ड प्लेयर को नहीं बेचना चाहता था। वह अग्रगामी बनने के लिए तैयार था, लेकिन अपने संगीत को नहीं छोड़ सकता था।

गोल्डा और मॉरिस, शेना, उसके परिवार और कुछ दोस्तों के साथ लगभग दो महीने की यात्रा पर निकले। यात्रा का अधिकांश समय उन्होंने एक खतरनाक छोटी सी नाव, एस.एस. पोकाहोंटस, पर बिताया। उनके सफ़र के दौरान जहाज़ में आग लगी, इंजन कई बार ख़राब हुआ, नाविकों ने खराब परिस्थितियों का विरोध करने के लिए यात्रियों के खाने में बहुत सारा नमक डाल दिया, पीने के पानी में खारा समुद्री पानी मिला दिया, और जहाज़ का फ्रिज तोड़ डाला। एक नाविक तो पागल हो गया और उसे जंजीरों में बांधना पड़ा।

पोकाहोंटस गोल्डा, मॉरिस और अन्य यात्रियों को इटली ले गई, जहाँ से मिस्र जाने के लिए वे दूसरी नाव में सवार हुए।

वहाँ से उन्होंने फ़िलिस्तीन के यहूदी शहर तेल अवीव तक ट्रेन से यात्रा की। ट्रेन की खिड़की से गोल्डा ने पहली बार अपनी मातृभूमि को देखा। उसने रेत का विशाल, अंतहीन सागर देखा। जब उनका समूह अंततः उस ट्रेन से उतरा, तो उन्होंने तेल अवीव की गर्मियों की तेज़ धूप का पूरा असर महसूस किया। गोल्डा के समूह में से एक व्यक्ति ने कहा कि मैंने बहुत देख ली अपनी मातृभूमि, अब मैं वापस जाना चाहता हूँ।

अगले कुछ दिनों में समूह ने अपने कमरों में खटमल पाए। वे तेल अवीव के बाज़ार गए, जो मक्खियों से भरा था। उन्होंने यहूदियों से मुलाकात की, जो अरब दंगों से भागकर रेत में टेंट गाढ़ कर रह रहे थे। पड़ोसी अरब शहर जाफ़ा और भी बदतर था—उसकी सड़कों पर पागल, अंधे, अपाहिज भिखारी, कुष्ठ रोगी और फटे-पुराने कपड़े पहने लोग भरे हुए थे। लेकिन गोल्डा और मॉरिस रुके रहे। और वह व्यक्ति भी रुका रहा जिसने कहा था कि उसने अपनी मातृभूमि काफी देख ली है।

फ़िलिस्तीन में नए यहूदी समुदाय के शुरुआती वर्षों के दौरान, दुनिया भर के यहूदी, अमीर से लेकर गरीब से गरीब तक, नीले टिन के डब्बों में सिक्के डाल कर अपना अपना योगदान दे रहे थे। उन सिक्कों से अरबों से ज़मीन खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा जमा हुआ। लगभग उसी समय जब गोल्डा और मॉरिस फ़िलिस्तीन आए, एक बड़ी बंजर दलदली ज़मीन यहूदी बस्ती के लिए खरीदी गई। यही वह जगह थी जहाँ गोल्डा ने काम करने का निर्णय किया।

गोल्डा और मॉरिस ने मेरहव्याह (Merhavyah) में शामिल होने की कोशिश की। यह एक किब्बुत्ज़ (kibbutz) था—लोगों का एक छोटा सा समुदाय, जो साथ मिलकर काम करते थे और अपनी कमाई और संपत्ति सबके साथ साझा करते थे।

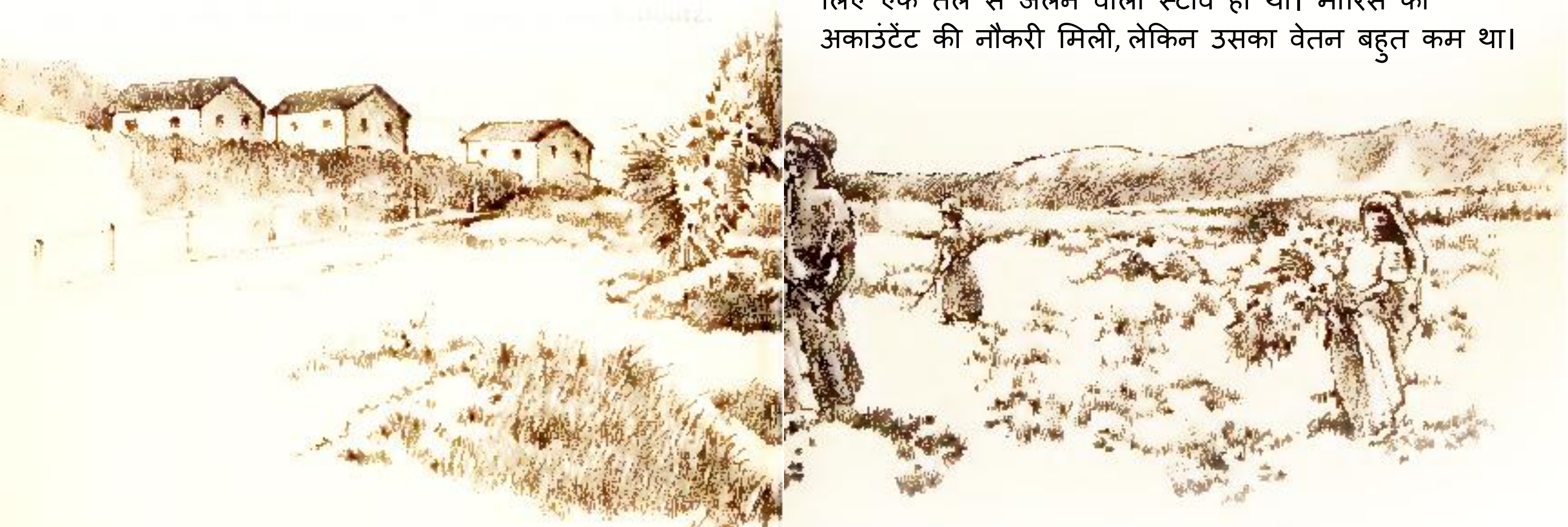
शुरुआत में, मेरहव्याह के तीस पुरुष और सात महिलाएँ गोल्डा को नहीं चाहते थे। उन्हें यकीन था कि वह एक “बिगड़ी हुई अमेरिकी लड़की” है, जो गर्म धूप में लंबे समय तक काम नहीं कर पायेगी। बाद में, जब गोल्डा और मॉरिस को स्वीकार किया गया, तो गोल्डा को लगा कि समूह ने उन्हें केवल इसलिए स्वीकार किया, ताकि वे मॉरिस द्वारा अमेरिका से लाए गए संगीत के रिकॉर्ड सुन सकें।

गोल्डा और मॉरिस ने कड़ी मेहनत की—पेड़ लगाए, बादाम चुने, गायों को खिलाया और उनका दूध निकाला, सड़कें बनाई, और घर बनाए। गोल्डा ने मेरहव्याह के मुर्गियों के दड़बे संभाले। रसोई में गोल्डा अक्सर गरम दलिया और चने का हलवा बनाती, और किब्बुज़ में सभी के लिए कॉफ़ी तैयार करती।

गोल्डा और मॉरिस मेरहव्याह में दो से अधिक वर्षों तक रहे। लेकिन मॉरिस वहाँ खुश नहीं थे। गोल्डा अक्सर इतनी व्यस्त रहती कि उसके पास मॉरिस के लिए समय नहीं होता। वहाँ बहुत सारे नियम थे जो मॉरिस को पसंद नहीं थे, और वह पढ़ने और संगीत कार्यक्रमों में जाने के अवसरों का अभाव महसूस कर रहे थे।

मॉरिस अक्सर बीमार रहते। कई बार उन्हें मलेरिया के कारण सर्दी और तेज बुखार हो जाता—यह एक बीमारी थी जो दलदलों में पनपने वाले संक्रमित मच्छरों से फैलती थी। डॉक्टर ने गोल्डा से कहा कि तेज धूप, कठिन परिश्रम, और खराब भोजन मॉरिस के लिए बहुत भारी पड़ रहा है।

गोल्डा और मॉरिस मेरहव्याह छोड़कर यरूशलेम में एक छोटे से दो-कमरों के अपार्टमेंट में रहने लगे। उनके पास गैस या बिजली नहीं थी। कमरे को गरम रखने और रौशनी, दोनों के लिए एक तेल से जलने वाला स्टोव ही था। मॉरिस को अकाउंटेंट की नौकरी मिली, लेकिन उसका वेतन बहुत कम था।



भोजन, स्टोव के लिए तेल, और किराया, ये सारे खर्चे उठा पाना एक जद्दोजहद जैसा था।

यरूशलेम में रहते हुए गोल्डा और मॉरिस के दो बच्चे हुए – मेनाखेम और सारा। गोल्डा अपने बच्चों से बहुत प्यार करती थी, लेकिन उसे मेरहव्याह की याद आती थी – वहाँ के लोग और वहाँ का काम उसे बहुत याद आता था।

चार साल तक बच्चों की देखभाल करने के बाद, गोल्डा ने काम शुरू किया। वह हिस्टाद्रुत (Histadrut), यानी फ़िलिस्तीन में यहूदी मज़दूर संघ, में सचिव बन गई। बहुत जल्द ही वह उसके नेताओं में से एक बन गई। लेकिन गोल्डा इतना अधिक समय बाहर रहती थी कि मॉरिस खुश नहीं था। हिस्टाद्रुत में काम करने के वर्षों के दौरान, मॉरिस कई बार घर छोड़कर चले गए, फिर लौटे, और फिर चले गए। उन्होंने कभी तलाक नहीं लिया, लेकिन अपनी शादी के ज़्यादातर समय में गोल्डा और मॉरिस अलग-अलग ही रहते थे।

गोल्डा हमेशा काम में व्यस्त रहती – भाषण देने में, बैठकों की भागमभाग में। कभी-कभी जब गोल्डा यात्रा पर जाती, तो वह बच्चों को अपने साथ ले जाती, लेकिन ज़्यादातर वे उसकी बहन शेना के पास रहते।

1930 के दशक में, गोल्डा, हिस्टाद्रुत के अन्य नेताओं, और दुनिया भर के यहूदियों को कई कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा। फ़िलिस्तीन में अरब लोग बसों और ट्रेनों को पलट देते थे। वे यहूदियों पर हमला करते और उन्हें मार डालते। गोल्डा ने यहूदियों से कहा कि वे अपनी रक्षा करें – लेकिन बदला न लें।

उसी समय, जर्मनी में नाज़ियों ने यहूदियों के काम करने, स्कूल जाने और संपत्ति रखने के अधिकार छीन लिए।

उन्होंने यहूदियों की दुकानों और उपासनागृहों (सिनगॉग्स) पर हमला किया और उन्हें नष्ट कर दिया। और जैसे-जैसे नाज़ी अधिक शक्तिशाली होते गए, उन्होंने यहूदियों को श्रम शिविरों, कंसन्ट्रेशन कैंपों—मृत्यु शिविरों में भेजना शुरू किया। उन्होंने यहूदियों को प्रताड़ित किया, गैस से मारा, और यहूदी पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों की बेरहमी से हत्या की।

गोल्डा "यहूदी समस्या" पर एक बैठक में भाग लेने फ्रांस गईं। बीस से अधिक देशों के नेता वहाँ बोले। लेकिन कोई भी नेता अपने देश के दरवाज़े उन बेघर, सताए हुए यहूदियों के लिए खोलने को तैयार नहीं था।

फिर गोल्डा ने बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा, "ये इंसान हैं, गिनती के नंबर नहीं। उन्हें फ़िलिस्तीन आने दो। हम गरीब हैं, लेकिन हम अपनी गरीबी के टुकड़े भी खुशी से उनके साथ बाँट लेंगे।"

लेकिन उस समय फ़िलिस्तीन पर ब्रिटिशों का शासन था, और बैठक के कुछ ही समय बाद ब्रिटिशों ने घोषणा की कि अगले पाँच वर्षों में केवल सीमित संख्या में ही यहूदियों को फ़िलिस्तीन आने दिया जाएगा – और उसके बाद किसी को भी नहीं।

नाज़ी काल के दौरान, सुरक्षा की तलाश में यहूदियों से भरे जहाज़ फ़िलिस्तीन पहुँचे। लेकिन ब्रिटिशों ने उन्हें वापस लौटा दिया। यूरोप में यहूदी खलिहानों, जंगलों, तहखानों, अटारियों, नालियों, और यहाँ तक कि कब्रिस्तानों में छिपे रहे। सभाएँ हुईं, विरोध प्रदर्शन हुए – लेकिन अंततः छह मिलियन (साठ लाख) पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्या कर दी गई – सिर्फ इसलिए क्योंकि वे यहूदी थे।

युद्ध के बाद, एक हज़ार बचे हुए यहूदियों से भरे दो जहाज़ फ़िलिस्तीन की ओर जा रहे थे, लेकिन ब्रिटिशों ने उन्हें भी रोक दिया। वे यहूदियों को उतरने नहीं दे रहे थे – और यहूदी भी जहाज़ छोड़ने को तैयार नहीं थे।

उन्होंने खाने से इनकार कर दिया। उन्हें भूखे मर जाना मंज़ूर था, लेकिन वापस जाना नहीं। फ़िलिस्तीन में गोल्डा और उनके द्वारा संगठित एक समूह ने भी भूख हड़ताल शुरू की। सौ घंटे से भी अधिक समय तक बिना कुछ खाए रहने के बाद, अंततः ब्रिटिशों ने उन जहाज़ों को जाने दिया। लेकिन अधिकांश यहूदियों से भरे जहाज़ों को अब भी फ़िलिस्तीन में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई। हजारों यहूदी — जिन्होंने जर्मनी में नाज़ी आतंक से किसी तरह जान बचाई थी — ब्रिटिशों द्वारा फिर से जर्मनी लौटने के लिए मजबूर किए गए।

1947 में गोल्डा साइप्रस के एक शिविर में गईं — झोपड़ियों और तंबुओं से बना एक कैंप, जो मीनारों और काँटेदार तारों से घिरा था। यह नाज़ियों से बचे हुए यहूदियों के लिए ब्रिटिशों का बनाया हुआ शिविर था। ब्रिटिश हर महीने केवल सात सौ पचास यहूदियों को साइप्रस से फ़िलिस्तीन जाने की अनुमति देते थे। गोल्डा ने व्यवस्था की कि सबसे पहले बच्चों को जाने दिया जाए। जब गोल्डा शिविर में थीं, दो छोटे बच्चों ने उन्हें कागज़ के फूलों का गुलदस्ता दिया। वे फूल उन बच्चों की ओर से थे जो इतने छोटे थे कि उन्हें याद भी नहीं था कि कभी उन्होंने तारों से घिरे शिविरों के बाहर जीवन देखा था — शायद उन्होंने कभी असली फूल भी नहीं देखे थे। वे कागज़ के फूल गोल्डा के लिए एक ऐसा उपहार बन गए जिसे वह कभी नहीं भूलीं।

युद्ध के बाद के साल — 1946 और 1947 — फ़िलिस्तीन में अत्यंत रक्तरंजित वर्ष थे। अरब लोग पहाड़ियों में छिप जाते और नीचे सड़कों पर यात्रा कर रहे यहूदियों पर हमला करते। ब्रिटिशों ने अनेक यहूदी स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ़्तार कर उन्हें फाँसी देदी। जवाब में, यहूदियों ने रेलमार्ग, पुल, नौकाएँ, और ब्रिटिश सेना के मुख्यालयों को उड़ा दिया।



फिलिस्तीन की समस्या संयुक्त राष्ट्र के सामने रखी गई, और नवंबर 1947 में सदस्यों ने एक विभाजन योजना पर मत दिया। उस योजना के अनुसार फ़िलिस्तीन को एक अरब राज्य और एक यहूदी राज्य में बाँटा जाना था। यहूदी राज्य छोटा होगा। इसमें यरूशलेम शामिल नहीं होगा। लेकिन वह एक राज्य होगा – एक यहूदी राज्य।

फ़िलिस्तीन भर के यहूदी रेडियो के पास बैठकर पेंसिल और काग़ज़ लेकर वोटों का हिसाब रख रहे थे। अफ़ग़ानिस्तान: नहीं। अर्जेंटीना: कोई मत नहीं, यानि उन्होंने पक्ष नहीं लिया। ऑस्ट्रेलिया: हाँ। बेल्जियम: हाँ। ब्राज़ील: हाँ। क्यूबा: नहीं। अंततः तैंतीस देशों ने हाँ में वोट दिया, जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस भी शामिल थे। तेरह देशों ने नहीं कहा। दस देश निष्पक्ष रहे, जिनमें ब्रिटिश शामिल थे। प्रस्ताव पारित हो गया। कुछ ही महीनों में ब्रिटिश फिलिस्तीन छोड़ देंगे और यहूदियों के पास एक मातृभूमि होगी।

फ़िलिस्तीन की सड़कों पर यहूदियों की भीड़ जश्न मनाने आई। लेकिन गोल्डा जानती थी कि परेशानी आएगी। वह अपने कार्यालय की बालकनी पर खड़ी होकर भीड़ से बोलीं – पर असल में वह फ़िलिस्तीन के अनेक अरबों से बोल रही थी। “अब हम साथ मिलकर दोस्ती और शांति से रहें,” उसने कहा।

संयुक्त राष्ट्र में अरब लोग बहुत क्रुद्ध थे। उन्होंने कहा कि यह वोट युद्ध की ओर ले जाएगा। फिर वे हॉल से बाहर चले गए।

अगले ही दिन हिंसा हुई। जब ब्रिटिश पुलिस खड़ी-खड़ी मात्र देखती रही, और अरबों ने यरूशलेम में यहूदी दुकानों को जला दिया और एक बस में सवार पाँच यहूदियों को मार डाला। अगर यहूदियों को एक मातृभूमि चाहिए थी, तो उसके लिए लड़ना पड़ेगा।

इजराइल

युद्ध। यह तो ब्रिटिशों के फ़िलिस्तीन छोड़ने से पहले ही शुरू हो गया था। फ़िलिस्तीन के अरब लोग किसी भी हालत में एक यहूदी राज्य नहीं चाहते थे, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो।

फ़िलिस्तीन काँटेदार तारों, काली पड़ी खिड़कियों, चौकीदारों, बंदूकों और घर में बनाए गए बमों की भूमि बन गया। पानी की पाइपें उड़ा दी गईं। कारें, ट्रक और इमारतें विस्फोटों में नष्ट हो गईं।

फ़िलिस्तीन के चारों ओर के अरब देशों के पास बंदूकें, टैंक और बम थे। ब्रिटिशों ने अरबों को हथियार बेचे। उन्होंने अरब देशों के सैनिकों को प्रशिक्षित किया और उनका समर्थन किया। लेकिन ब्रिटिशों ने यहूदियों को हथियार रखने की अनुमति नहीं दी। यहूदी सैनिक गुप्त रूप से प्रशिक्षण लेते थे – लकड़ी की लाठियों को बंदूकों की तरह इस्तेमाल करते हुए।





यहूदी जानते थे कि जब ब्रिटिश चले जाएंगे, तो पास के अरब राज्यों की सेनाएँ हमला कर देंगी। यहूदियों को और ज़्यादा बंदूकें ख़रीदने की ज़रूरत थी। और उसके लिए पैसों की ज़रूरत थी।

तेल अवीव में एक बैठक में यह निर्णय लिया गया कि गोल्डा अमेरिका जाकर धन जुटाएंगी। वह बैठक छोड़कर सीधे हवाई अड्डे चली गईं। वह सर्दी की एक तेज़ बर्फ़ीली हवा के बीच न्यूयॉर्क पहुँचीं, केवल अपने हैंडबैग के साथ। उनके पास तो एक कोट भी नहीं था।

गोल्डा ने सबसे पहले इलिनॉयस के शिकागो में एक सम्मेलन में भाषण दिया। जैसा कि हमेशा होता था, वह बिना नोट्स के बोलीं। वह दिल से बोल रही थीं। गोल्डा ने शिकागो के अपने श्रोताओं को उन छात्रों के बारे में बताया जो यहूदी बस्ती की रक्षा करने मदद के लिए जा रहे थे। उन पर अरबों ने हमला कर दिया था। बाद में, जब उनके शव मिले, तो कुछ छात्रों के हाथों में अभी भी पत्थर थे।

“अगर हमारे पास लड़ने के लिए बंदूकें होंगी,” गोल्डा ने शिकागो के लोगों से कहा, “तो हम उन्हीं से लड़ेंगे। अगर नहीं, तो पत्थर ही हाथ में लेकर लड़ेंगे।”

हमारे पास जज़्बा तो है। पर सिर्फ़ यह जज़्बा बंदूकों और मशीनगनों का सामना नहीं कर सकता... आप यह तय नहीं कर सकते कि हमें लड़ना चाहिए या नहीं। यह निर्णय हम लेंगे। आप केवल एक बात तय कर सकते हैं – क्या हम विजयी होंगे।”

श्रोतागण खड़े हो गए। उन्होंने खुशी से तालियाँ बजाईं। गोल्डा ने अमेरिका में कई करोड़ों डॉलर जुटा लिए – उससे भी ज़्यादा जितना उसने कभी सोचा था। जब गोल्डा घर लौटी, तो डेविड बेन-गुरियन, फिलिस्तीन में यहूदियों के नेता, ने कहा, “किसी दिन, जब इतिहास लिखा जाएगा, तो कहा जाएगा कि एक यहूदी महिला थी जिसने वह पैसा जुटाया जिसने राज्य को संभव बनाया।”

फिर दो महीने बाद, ठीक उस समय जब ब्रिटिश सेना फिलिस्तीन छोड़ने वाली थी, गोल्डा एक गुप्त मिशन पर निकलीं। उन्होंने काले अरब वस्त्र और घूंघट पहना। वह रात में देर से यात्रा पर निकलीं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई उनका पीछा न करे, दो बार गाड़ी बदली। गोल्डा नहीं चाहती थीं कि अरबों को पता चले कि वह जॉर्डन के अरब राजा अब्दुल्ला से मिलने जा रही हैं। कुछ महीने पहले राजा अब्दुल्ला ने वादा किया था कि वह यहूदियों के खिलाफ होने वाले युद्ध में शामिल नहीं होंगे। गोल्डा ने उनसे आग्रह किया कि वे अपना वादा निभाएँ। यहूदी शांति चाहते थे। लेकिन राजा ने कहा कि वह अरब युद्ध से बाहर नहीं रह सकते। जैसे ही इज़राइल को राज्य घोषित किया जाएगा, उनकी सेना मिस्र, सीरिया, लेबनान और इराक की सेनाओं के साथ मिलकर इज़राइल को नष्ट करने के लिए लड़ेगी।

अगले कुछ महीनों तक इज़राइल में गोलियाँ चलीं, सड़कें बंद की गईं, हमले और बम विस्फोट हुए। अरब इज़राइल के जन्म को रोकने के लिए लड़ रहे थे, और यहूदी पलटकर जवाब दे रहे थे। जब अरब नागरिकों को खबर मिलती कि यहूदी सैनिक आ रहे हैं, तो वे अपने घर छोड़कर भाग जाते।

एक शहर, हैफ़ा, में जब अरब लोग नौकाओं और ब्रिटिश ट्रकों में बैठकर शहर छोड़ रहे थे, तो गोल्डा ने लाउडस्पीकर के ज़रिए उन्हें रुकने के लिए कहा – ताकि वे यहूदी राज्य का हिस्सा बन सकें। उन्होंने कहा कि वे भी यहूदियों की तरह इज़राइल के नागरिक बन सकते हैं, समान अधिकारों के साथ। लेकिन वे नहीं रुके।

संयुक्त राष्ट्र में भाषण हुए, बैठकें हुईं, और युद्धविराम के समझौते किए गए। जब लड़ाई खत्म हुई, तब एक यहूदी राज्य बन चुका था – इज़राइल। इज़राइल के पास वह भूमि थी जो संयुक्त राष्ट्र ने उसके लिए निर्धारित की थी। लेकिन एक अरब राज्य – फ़िलिस्तीन – नहीं बन सका।

लड़ाई में कुछ भूमि पर इज़राइल ने कब्ज़ा किया। बाकी सारी भूमि जॉर्डन और मिस्र के अरब राज्यों ने ले ली।

14 मई 1948 को इज़राइल को एक राज्य घोषित किया गया। जब गोल्डा ने स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किए, तो उनकी आँखों में आँसू भर आए। वे आँसू खुशी के थे, और वे आँसू उन लाखों यहूदियों के लिए भी थे जो नए राज्य को देखने के लिए जीवित नहीं रह पाए – वे यहूदी जो इसलिए नहीं जी पाए क्योंकि उनके लिए कोई यहूदी राज्य मौजूद नहीं था।



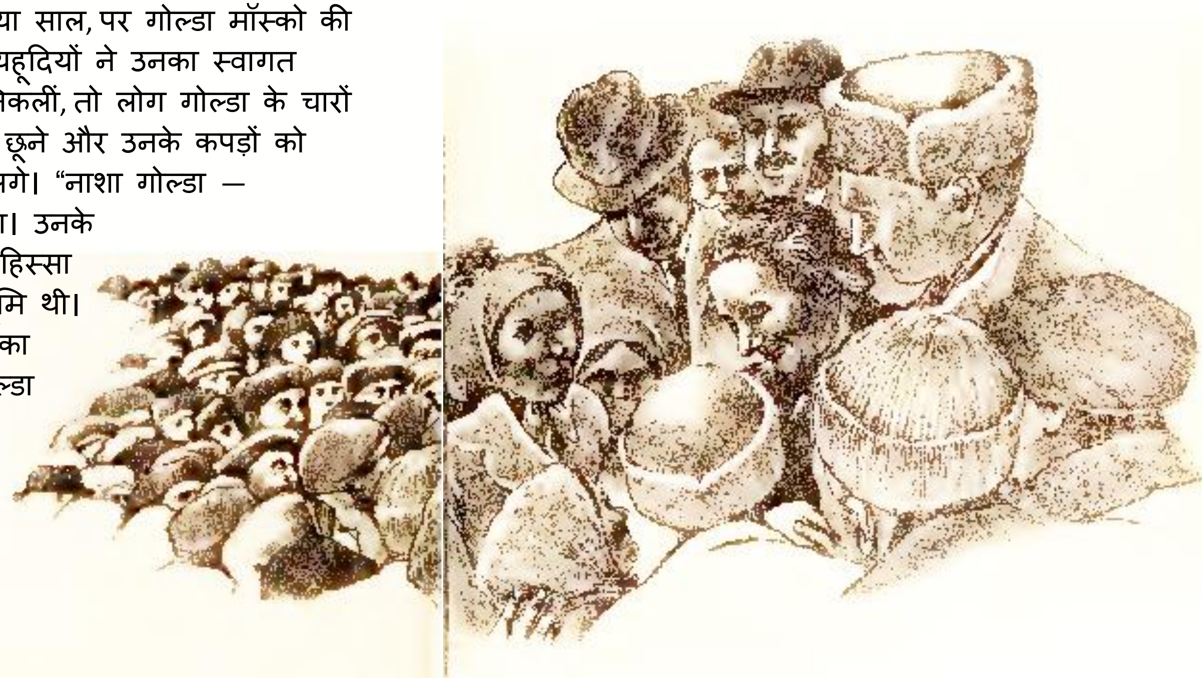
इज़राइल के राज्य बनने के कुछ ही समय बाद, गोल्डा मॉस्को भेजी गईं। वह रूस में इज़राइल की पहली राजदूत थीं। वहां रहते हुए, गोल्डा चाय और डिनर पार्टियों में गईं। उन्होंने कूटनीतिज्ञों और पत्रकारों से मुलाकात की। और उन्होंने रूस के यहूदियों से मुलाकात की — जिन्हें "'मौन यहूदी" कहा जाता था। उन्हें हिब्रू पढ़ने, यहूदी छुट्टियाँ मनाने, या पासओवर त्यौहार मनाने के लिए मट्ज़ा (एक विशेष प्रकार की डबलरोटी) बनाने की भी अनुमति नहीं थी। उनके धर्मगुरुओं को अक्सर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाता था। रूसी सरकार धर्म के खिलाफ थी, और जो भी खुलकर अपनी यहूदी पहचान का ज़िक्र करता, वह खतरे में पड़ जाता।

रौश हशाना, यहूदी नया साल, पर गोल्डा मॉस्को की सिनेगॉग में गईं। हजारों यहूदियों ने उनका स्वागत किया। जब वह वहां से निकलीं, तो लोग गोल्डा के चारों ओर इकट्ठा हो गए, उन्हें छूने और उनके कपड़ों को चूमने की कोशिश करने लगे। "नाशा गोल्डा — हमारी गोल्डा," उन्होंने कहा। उनके लिए गोल्डा इज़राइल का हिस्सा थीं। वह उनकी भी मातृभूमि थी। गोल्डा जानती थीं कि उनका स्वागत करने के लिए गोल्डा के पास आना उनके लिए कितना कठिन था। "धन्यवाद," गोल्डा ने उन्हें कहा, "यहूदी बने रहने के लिए।"

कुछ ही दिनों बाद, गोल्डा फिर से मॉस्को की सिनेगॉग गईं। यह योम किप्पुर, यहूदी वर्ष का सबसे पवित्र दिन, था। सेवा के अंत में, जब यहूदी पारंपरिक रूप से प्रार्थना करते हैं कि अगले साल वे यरूशलेम में हों, तो पूरी सभा ने गोल्डा की ओर देखा।

तब गोल्डा को पता चला कि यहूदियों के लिए, संपूर्ण दुनिया में, यह सबसे महत्वपूर्ण था कि इज़राइल का अस्तित्व बना रहे।

गोल्डा रूस में थीं, उसी समय इज़राइल में पहले चुनाव हुए। डेविड बेन-गुरियन नए राष्ट्र के नेता और प्रधानमंत्री बने। उन्होंने गोल्डा से कहा कि वह इज़राइल की पहली श्रम मंत्री बनें।



जब गोल्डा इज़राइल लौटीं, तो यहूदी लगातार देश में आ रहे थे। वे तुर्की, पोलैंड, रोमानिया और यमन से आए। अरब देशों से भी यहूदी शरणार्थी आए। नाज़ी काल में जिन यहूदियों ने अपने घर और परिवार खो दिए थे, वे जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली और साइप्रस से आए। हर हफ्ते हजारों यहूदी आते। उन्हें भोजन, कपड़े और स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता थी। उनके बच्चों को स्कूलों की ज़रूरत थी।

आने वाले यहूदी ज्यादातर गरीब थे, और सभी की देखभाल करना इज़राइल के लिए कठिन था। कई लोगों ने सोचा कि इज़राइल को लोगों के आने की धारा को धीमा करना चाहिए। लेकिन गोल्डा ने कहा कि उसने और अन्य लोगों ने एक मातृभूमि के लिए संघर्ष किया है, और एक घर के दरवाजे हमेशा खुले रहने चाहिए। यहूदियों का, चाहे वे कितने भी हों या चाहे कितने भी गरीब हों, हमेशा इज़राइल में स्वागत किया जाना चाहिए।

गोल्डा ने इज़राइल के नए नागरिकों से उनके तंबुओं और लोहे की झोपड़ियों में मुलाकात की। श्रम मंत्री के रूप में उन्होंने ज़ोर दिया कि उनके लिए घर बनाए जाएँ। उन अरबों के लिए भी घर बनाए गए जो इज़राइल में अभी भी थे लेकिन स्वतंत्रता युद्ध के दौरान अपने घर खो चुके थे। गोल्डा ने भवन योजनाओं में बदलाव किया ताकि हर नए छोटे घर के अंदर शौचालय हो और रसोई में खिड़की हो, ताकि महिलाएं काम करते हुए बाहर देख सकें, और अपने बच्चों पर नज़र रख सकें।

गोल्डा ने नए नागरिकों के लिए स्कूल स्थापित करने में मदद की, ताकि उन्हें प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन और किसान बनने की शिक्षा दी जा सके। उन्होंने रोज़गार सृजित करने, सड़कें बनाने, और विधवाओं और अनाथों के लिए फंड स्थापित करने का काम किया। गोल्डा सबसे ज़्यादा खुश तब होती थीं जब वह लोगों की मदद कर रही होती थीं। वह अक्सर कहती थीं कि श्रम मंत्री के रूप में बिताए गए सात साल उनके जीवन के सबसे खुशहाल वर्ष थे।

1956 में, बेन-गुरियन ने गोल्डा से कहा कि वह विदेश मंत्री बनें। उन्होंने यह भी कहा कि गोल्डा अपना नाम बदलें। बेन-गुरियन ने महसूस किया कि जर्मन, रूसी और अंग्रेज़ी अंतिम नाम अन्य देशों से संबंध दर्शाते थे। उन्होंने खुद अपना नाम ग्रूएन से बदलकर बेन-गुरियन कर लिया था। अन्य इज़राइलियों ने भी अपने नाम बदले। गोल्डा ने अपना नाम मायर्सन से बदलकर मेयर रखा, जिसका अर्थ है “रोशनी देना।”

विदेश मंत्री रहते हुए, गोल्डा ने इज़राइल से पैसे और लोग गरीब अफ्रीकी देशों की मदद के लिए भेजे। गोल्डा अफ्रीका गईं, और एक बार वह वहां काले अफ्रीकी नेताओं के साथ बस में थीं। वे विश्व के सबसे ऊँचे जलप्रपात, विक्टोरिया फ़ॉल्स, देखने जा रहे थे। उनकी बस रोक दी गई और काले लोगों को सफेद लोगों से अलग होने के लिए कहा गया। गोल्डा ने आगे जाने से इंकार कर दिया। अगर वह अपने दोस्तों के साथ नहीं हो सकती थीं, तो वह जलप्रपात देखना भी नहीं चाहती थीं। बस वापस मुड़ गई।

1965 में, विदेश मंत्री के नौ साल पूरा होने के बाद, गोल्डा ने सेवानिवृत्ति ले ली। लेकिन पूरी तरह से नहीं। वह अब भी अपने राजनीतिक दल, मापाई, के लिए काम करती रहीं। इसरायली संसद "कनेस्सेट" में गोल्डा की सीट बरक़रार थी।

उन कुछ अपेक्षाकृत शांत वर्षों में, गोल्डा खरीदारी, खाना बनाना, कपडे धोना, इस्त्री करना, और घर के अन्य काम करती थीं। वह अपने बड़े हो चुके बच्चों और पोते-पोतियों से मिलने जाती थीं।

लेकिन इज़राइल के लिए ये साल शांत नहीं थे। 1967 में, मिस्र ने ईलात बंदरगाह तक पहुँचने वाली सभी नौकाओं को रोक दिया। हजारों टैंक और सशस्त्र अरब सैनिक मिस्र, सीरिया, और जॉर्डन की सीमाओं पर खड़े थे, हमला करने के लिए तैयार। जून की शुरुआत में, प्रधानमंत्री लेवी एश्कोल ने इन तीन पड़ोसी देशों के खिलाफ युद्ध का नेतृत्व किया। छह दिन बाद, जब लड़ाई रुकी, इज़राइल ने शानदार जीत हासिल की और अरब भूमि के बड़े क्षेत्रों पर कब्ज़ा किया।

फरवरी 1969 में, लेवी एश्कोल, गोल्डा के अच्छे मित्र और इज़राइल के नेता, का निधन हो गया। गोल्डा को इज़राइल की नई प्रधानमंत्री चुना गया। अरबों ने उन्हें “गोल्डा लॉक्स” और “ओल्ड लेडी” कहा। समाचारपत्रों ने उन्हें “इज़राइल की बिना मुकुट वाली रानी” कहा।

शुरुआत में, इज़राइल के नेताओं ने गोल्डा को केवल नए चुनाव तक प्रधानमंत्री चुना। लेकिन अक्टूबर में जनता ने मतदान किया, और 71 वर्षीय गोल्डा को अपना नेता बने रहने के लिए चुना गया।

गोल्डा के प्रधानमंत्री रहते हुए पाँच वर्षों में इज़राइल में अनेक घर और फैक्ट्रियाँ बनाई गईं। इज़राइल ने अपना पहला जेट विमान, कॉमोडोर भी बनाया।

और हजारों यहूदियों को रूस से इज़राइल आने और बसने की अनुमति मिली। लेकिन समस्या भी हुई। अरब आतंकवादियों ने एक स्कूल बस, तेल अवीव बस स्टेशन, हिब्रू विश्वविद्यालय, और जेरूसलम के खाद्य बाजार में बमबारी की। इज़राइल आने वाली उड़ानों का अपहरण किया गया। जर्मनी के म्यूनिख में ओलंपिक खेलों में इज़राइली खिलाड़ियों की हत्या कर दी गई।

शांति की तलाश में, गोल्डा ने पेरिस में गुप्त रूप से जॉर्डन के राजा हुसैन से मुलाकात की, और उन्होंने पोप पॉल VI से भी मुलाकात की। लेकिन वह युद्ध की तैयारी भी कर रही थीं। प्रधानमंत्री बनने के तुरंत बाद, वह वॉशिंगटन गईं और राष्ट्रपति निक्सन से मिलीं। उन्होंने उन्हें एक सूची दी जिसमें बताया कि अरब हमले से बचाव के लिए इज़राइल को कौन-कौन से हथियार चाहिए।

वह हमला आया अक्टूबर 1973 में, यॉम किपुर पर, यहूदी वर्ष के सबसे पवित्र दिन। मिस्र और सीरिया की भारी सेनाओं, टैंकों और बमवर्षक विमानों ने इज़राइल पर अचानक हमला कर दिया। हजारों इज़राइली सैनिक, कई तो सीधे सिनागॉग से आते हुए, तेज़ी से लड़ाई में शामिल होने पहुंचे। कुछ दिनों बाद इराक और फिर जॉर्डन ने भी इज़राइल के खिलाफ युद्ध में भाग लिया। लेकिन दो हफ्तों से अधिक चली भारी लड़ाई के बाद, जब सैनिक संघर्ष विराम घोषित हुआ, इज़राइल की सेनाएँ नियंत्रण में थीं। उन्होंने सीरिया में प्रवेश किया और सुएज नहर पार कर मिस्र में घुस गईं।

युद्ध के बाद इज़राइल में गोल्डा और उनकी सरकार के खिलाफ आक्रोश फैला। लड़ाई में हजारों सैनिकों की मृत्यु हुई थी। लोग पूछ रहे थे, "इज़राइल तैयार क्यों नहीं था?"

लेकिन इज़राइल के लोग अभी भी चाहते थे कि गोल्डा ही उनका नेतृत्व करें, और युद्ध के तुरंत बाद हुए चुनावों में, गोल्डा को फिर से प्रधानमंत्री बनाया गया।

गोल्डा केवल कुछ महीनों तक ही इस पद पर रहीं। फिर, 1974 में, 76 वर्ष की आयु में, गोल्डा ने इस्तीफा दे दिया।

अगले कुछ वर्षों में, गोल्डा ने महत्वपूर्ण विश्व नेताओं से मुलाकात की और बड़े समूहों के सामने भाषण दिया। अमेरिकी श्रोताओं के सामने अपने एक भाषण में गोल्डा ने बताया कि वह पहली बार 1921 में पेलेस्टाइन क्यों गईं।

“मैं स्वार्थी थी,” उन्होंने कहा। “मैंने सुना कि वहाँ कुछ हो रहा है, कुछ बन रहा है, और मैंने कहा, ‘क्या? और मैं इसमें हिस्सा नहीं लूंगी? नहीं। मैं जा रही हूँ।’”

गोल्डा ने अपनी जीवनी, My Life भी लिखी, जिसमें उन्होंने कीव और पिंस्क से लेकर इज़राइल राज्य तक की अपनी जीवन गाथा बताई। उसमें उन्होंने लिखा कि उनके पास एक सपना अभी भी था। वह सपना था कि अरब लोग सीमा पार करें, ट्रैक्टर लेकर, टैंक नहीं, और हाथ बढ़ाकर दोस्ती करें।

1977 में, गोल्डा के निधन से ठीक पहले, उन्होंने मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सदात से मुलाकात की, जो शांति की तलाश में इज़राइल आए थे। ऐसा लग रहा था कि उनका शालोम, यानी शांति का सपना, किसी दिन सच हो सकता है।

पुस्तक के विषय में

डेविड ए. एड्लर यहूदी इतिहास और संस्कृति पर कई किताबों के लेखक हैं। वह अपनी पत्नी और बेटे के साथ वुडमियर, न्यूयॉर्क में रहते हैं।

श्री एड्लर ने गोल्डा के जीवन की जगहों का सावधानीपूर्वक शोध किया, जिसमें उन्होंने गोल्डा के समकालीन व्यक्तियों की जीवनी, उस समय का एनसाइक्लोपीडिया और समाचार पत्र पढ़े। वह कहते हैं:

"जब मैं अभी बच्चा था, तब भी गोल्डा मेयर इज़राइल की विदेश मंत्री थीं। लेकिन हमारे घर में हम उन्हें स्नेहपूर्वक 'गोल्डा' कहते थे, जैसे वह हमारी करीबी व्यक्तिगत मित्र हों।"

डॉना रफ ने फ्लोरिडा में कला और कला इतिहास पढ़ाया, उसके बाद वह स्वतंत्र चित्रकार (freelance illustrator) बन गईं। वह अब अपने बेटे के साथ न्यूयॉर्क सिटी में रहती हैं।
जैकेट पेंटिंग के लिए, मिस रफ ने रंगीन स्याही, पेंसिल, और पेस्टल का उपयोग किया। अंदर की चित्रकारी सॉफ्ट पेंसिल से की गई।